पादुका री पादुका तू है परम सेवकि
पादुका री पादुका तू है परम सेवकि
पादुका री पादुका तू है परम प्रेमकि
तुझ में समाई है श्रीचरणों की सुवास
जनि श्रीचरणों की महमिा है ख़ास
रहती है तू नति्य सानधि्य में
करती है तू नति्य उनका आराधन
करती है तू नति्य चरनामृत का पान
प्रभु के चर्नार्वदि है तेरी पहचान
क्यों न हो तुझे इतना गुमान
गुरु चरनकमल है तेरी आन और शान
नति तू पीती है चरण कमल पराग
नति रहता तेरा मन मगन पाकर अनुराग
पादुका री तू धन्य धन्य है
तुझसा बडभागी कौन अन्य है ?
तू ही गुरु मनभावन है
तू ही अखंड सुहागन है